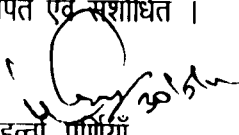
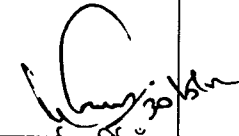


आदेश की क्रम संख्या एवं तारीख	आदेश और पदाधिकारी का हस्ताक्षर	आदेश पर की गई सुनवाई के बारे में टिप्पणी तारीख सहित
1	2	3
	<p style="text-align: center;"><b>न्यायालय, समाहर्ता, पूर्णियाँ</b>  <b>राजस्व अपील वाद संख्या-15/2004</b>  <b>U/S 48 (F) B.T.Act</b></p> <p>कृष्ण कुमार राय, पिता-स्व० मंगला प्रसाद राय, सा०-परोरा, थाना-के०नगर,  जिला-पूर्णियाँ _____ आवेदक</p> <p style="text-align: center;"><b>बनाम</b></p> <p>भीम सरकार, पिता-भोला सरकार, सा०-बेलगच्छी घाट, थाना-के०नगर, जिला-  पूर्णियाँ _____ विपक्षी</p> <p style="text-align: center;"><b>आ दे श</b></p> <p>आवेदकगण भूमि सुधार उप समाहर्ता, सदर के न्यायालय से बटाईदारी  वाद सा०-147/93-93  145/99-2000 में पारित आदेश के विरुद्ध यह वाद दायर किया गया है।  आवेदक का कथन है कि विपक्षी मौजा देवीनगर, खाता सं०-96, खेसरा सं०-20, रकवा 1.90  एकड़ एवं खेसरा नं०-21 रकवा 40 डि जमीन पर बटाईहक के लिए भूमि सुधार उप  समाहर्ता, सदर के न्यायालय में धारा 48 (E) B.T.Act अन्तर्गत वाद दायर किया। निम्न  न्यायालय द्वारा आवेदक को सूचित किये बिना ही वाद को प्रविष्ट किया गया। समझौता  बोर्ड द्वारा समझौता कराने में विफल होने के बाद निम्न न्यायालय में वाद निम्न न्यायालय में  वाद की सूचनाई प्रारंभ की गई। निम्न न्यायालय द्वारा स्थल जाँच किये बिना ही आवश्यक  प्रक्रियाओं को नजरअंदाज कर विपक्षी को बटाईदार घोषित किया गया। आवेदक का कथन  है कि प्रश्नगत जमीन उनके पूर्वज का है और कुल रकवा 11 एकड़ 33 डि० है, जिसमें कई  हिस्सेदार हैं। विपक्षी ने निम्न न्यायालय में कई हिस्सेदार को पक्षकार नहीं बनाया। आवेदक  के हिस्से में 25-30 एकड़ जमीन हैं और अपने ट्रेक्टर से स्वयं खेती करते हैं। विपक्षी एक  राज मिस्त्री है और कभी भी प्रश्नगत जमीन का बटाईदार नहीं रहा है। विपक्षी लालच में  आकर झुठा मुकदमा दायर किया और निम्न न्यायालय द्वारा गलत तथ्यों के आधार पर  आदेश पारित किया गया है। अतः आवेदक इस न्यायालय से अनुरोध करता है कि निम्न  न्यायालय का अभिलेख मंगवाकर वाद की सुनवाई करते हुए आदेश पारित करने की कृपा  की जाय।</p> <p>विपक्षी का कथन है कि यह वाद किसी भी दृष्टिकोण से निर्वहन योग्य  नहीं है। विपक्षी आवेदक के पिता मंगल प्रसाद राय से वर्ष 1980 ई० में प्रश्नगत जमीन बटाई  पर लिया था और आज तक खेती कर फसल बॉटकर भुस्वामी को दे रहा है। विपक्षी 12 वर्षों  से प्रश्नगत जमीन पर खेती कर रहा है। इस लिए अधिभोगी दर रैयत का हक प्राप्त कर  चुका है। आवेदक जमीन बेचना चाहते हैं इसलिए विपक्षी को बलपूर्वक जमीन छोड़ने के  लिए दवाव दे रहें हैं। भुस्वामी को इस बात की जानकारी नहीं है कि किस जमीन पर  विपक्षी द्वारा बटाई का दावा किया गया है। स्थानीय मुखिया ने विपक्षी द्वारा बटाई का दावा  को संपुष्ट किया है। इस प्रकार निम्न न्यायालय द्वारा पारित आदेश नियम के अनुकूल है।</p>	

## XIV-Form No. 563.

आदेश की क्रम संख्या एवं तारीख	आदेश और पदाधिकारी का इस्तेमाल	आदेश पर की गई कार्यवाही के बारे में टिप्पणी तारीख सहित
1	2	3
	<p>अतः विपक्षी इस न्यायालय से निवेदन करता है कि आवेदक द्वारा प्रारंभ किये गये इस वाद को खारिज करने की कृपा की जाय।</p> <p>पूर्व निर्धारित तिथि दिनांक 13.04.2012 को उभय पक्षों को सुना गया। आवेदक के विद्वान अधिवक्ता का कथन है कि निम्न न्यायालय द्वारा समझौता बोर्ड से वाद को वापस लेते हुए साक्ष्य हेतु रखा गया। परन्तु आवेदक के साक्ष्यों पर विचार नहीं किया। निम्न न्यायालय द्वारा समझौता बोर्ड हेतु कारगर प्रयास भी नहीं किया गया।</p> <p>विपक्षी के विद्वान अधिवक्ता का कहना है कि निम्न न्यायालय द्वारा समझौता बोर्ड हेतु प्रयास नहीं करने की आवेदक की बात निराधार है। निम्न न्यायालय के आदेश में आवेदक के साक्ष्य को भी मुख्य साक्ष्य के रूप में शामिल है।</p> <p>पुनः दिनांक 25.05.2012 को अभिलेख सुनवाई हेतु रखा गया।</p> <p>उपरोक्त तथ्यों, उभय पक्षों द्वारा उपलब्ध कराये गये कागजातों के अवलोकन एवं सुनवाई के बाद स्पष्ट है कि निम्न न्यायालय द्वारा पारित आदेश विधि सम्मत है एवं इस आदेश में किसी तरह की हस्तक्षेप करने की आवश्यकता नहीं है। इसके साथ इस वाद को समाप्त किया जाता है।</p> <p>लेखापित एवं संशोधित ।</p> <p> समाहर्ता, पूर्णियाँ</p> <p> समाहर्ता, पूर्णियाँ</p>	